रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

विश्व की वैज्ञानिक भाषा बनी संस्कृत–कुलपति प्रो. मिश्र
रादुविवि में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह का शुभारंभ

जबलपुर 12 मार्च। आज पूरा विश्व अगर किसी वैज्ञानिक भाषा को स्वीकार कर रहा है तो वह है संस्कृत। विभिन्न देशों में संस्कृत भाषा का विस्तार हो रहा है। भारत में भी इस दिशा में और प्रयास की जरूरत है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी इस पर जोर डाला गया है। ये बातें माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने दो दिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के उद्घाटन अवसर पर अध्यक्षीय उद्बोधन में कही।

कालिदास संस्कृत अकादमी मप्र संस्कृति परिषद उज्जैन एवं संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने कहा कि ग्यारहवी शताब्दी में जब महाकवि राजशेखर इस धरा पर आए तब संक्रमणकाल था, लेकिन कवि, लेखकों पर किसी का प्रभाव नहीं होता। राजशेखर में सभी गुण विद्यमान थे। आज ऐतिहासिक दिन है। आज के ही दिन दांडी मार्च शुरुआत हुई थी। आज पूरे देश में अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष भरत वैरागी ने संस्कृत भाषा की प्राचीनता एवं महाकवि राजशेखर की महत्ता को निरूपित तो किया ही, साथ ही संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता को सिद्ध करते हुए शिक्षा प्राप्ति के सम्पूर्ण चरणों में संस्कृत भाषा की अनिवार्यता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि आज दुनिया के विभिन्न देशों का संस्कृत भाषा के प्रति तेजी से आकर्षण बढ़ रहा है। संस्कृत भाषा को पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एवं विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि संस्कृत केवल कर्मकांड तक सीमित नहीं है। नासा ने इसे वैज्ञानिक भाषा में प्रयोग के लिए सबसे सटीक भाषा बताया है। कालिदास, राजशेखर ने जो भी लिखा वह वैज्ञानिकता के आधार पर ही लिखा है। आज विदेशों में संस्कृत भाषा अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जा रही है, लेकिन देश में आठवीं के बाद यह अनिवार्य नहीं है। आगे की कक्षाओं में भी यह अनिवार्य हो इस दिशा प्रयास किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम में विभाग के पूर्व आचार्य व वरिष्ठ संस्कृत विद्वान प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी ने मनुष्य के 10 घर्मों के लक्षणों पर प्रकाश डाला। विभाग के अध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र ने समारोह एवं संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए विषय प्रवर्तन किया तथा रामकथा परम्परा पर प्रकाश डालते हुए श्रीराम के जीवन चरित्र को आदर्श तथा अनुकरणीय बताया। कार्यक्रम में डॉ. ईला घोष व डॉ. जया शुक्ला की पुस्तकों का विमोचन किया गया।

इनका हुआ सम्मान–

इस अवसर पर दिवंगत आचार्य प्रज्ञाचक्षु डॉ० मोतीलाल पुरोहित का सम्मान उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अन्नपूर्णा पुरोहित के माध्यम से करते हुए डॉ० पुरोहित के संस्कृत साहित्य को प्रदत्त योगदान का उल्लेख किया गया। इसके साथ ही विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी एवं प्रो. कमलनयन शुक्ल जी का भी उनके अतुलनीय योगदान हेतु सम्मान किया गया।

द्वितीय सत्र–

समारोह के द्वितीय सत्र में विद्वानों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरिता यादव व अभार प्रदर्शन अजय मेहता ने किया। इस अवसर पर कार्य परिषद सदस्य निखिल देशकर, प्रो. कमलेश मिश्र, प्रो. सुरेंद्र सिंह, प्रो. पीके सिंघल, डॉ. माला पयासी, डॉ. साधना जंसारी, डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र, डॉ. अजय मिश्र, श्री प्रेम पुरोहित समेत बड़ी संख्या में विद्वान एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

संगोष्ठी के द्वितीय दिवस में आज तृतीय सत्र

दो दिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के द्वितीय दिवस में तृतीय सत्र का प्रारंभ प्रातः 9.30 बजे विश्वविद्यालय के विज्ञान भवन में आयोजित है जिसमें देश के विभिन्न प्रांतो से आये हुए विद्वान अपने शोध पत्रों का वाचन करेंगे। तृतीय सत्र में प्रातः 11.00 बजे कविराज राजशेखर का आचार्यत्व विषय पर विशिष्ट व्याख्यान प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, वाराणसी द्वारा दिया जायेगा जिसकी अध्यक्षता कालिदास संस्कृत अकादमी के पूर्व निदेशक तथा संस्कृत विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. कृष्णकांत चतुर्वेदी जी करेंगे। संयोजक प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र ने सभी संस्कृत अनुरागियों से कार्यक्रम में उपस्थिति की अपील की है।